ओमशांति। मीठे–2 पुरुषार्थी बच्चे, इस गीत का अर्थ तो स्वयं ही जानते होंगे। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जो यात्रा पर उपस्थित हैं वह ही यथार्थ अक्षर समझ सकते हैं। अब यह यात्रा है रात की, और जिस्मानी यात्राएँ होती हैं दिन की। अमरनाथ, बद्रीनाथ जाते हैं तो दिन को सफर कर, रात को सो जाते हैं और तुम बच्चों की मुसाफिरी है रात की। दिन में तो तुमको शरीर निर्वाह अर्थ काम करना पड़ता है, नौकरी पर जाते हो और माताएँ घर सम्भालती हैं। सबसे जास्ती उन्नति होती है रात को, जबकि सब मनुष्य सोय रहते हैं। तुम्हारी यात्रा उस समय बड़ी अच्छी हो सकती है। गायन भी है– रात गँवाई सोके। तुम्हारी यात्रा रात की बहुत अच्छी है। भगत लोग भी सवेरे अमृतवेले याद में रहते हैं। बच्चे अपनी उन्नति करना चाहते हैं तो बाप राय देते हैं– नींद को जीतने वाले बनो। 5000 वर्ष पहले भी कहा था। भल सवेरे सो जाओ। एक पहाका है– सवेरे सोना, सवेरे उठना, यह गुण मनुष्य को बड़ा बनाता है। बरोबर तुम इतने साहुकार बनते हो जो कब तुमको पैसे की परवाह नहीं रहती। तुमको 21 जन्म लिए वर्सा मिल जाता है शिवालय में। वैश्यालय में तो जन्म ब जन्म तुम पुरुषार्थ करते हो और अभी का तेरा पुरुषार्थ 21 जन्मों का बन जाता, वण्डर है न! ऐसा कोई भी पुरुषार्थ कराने वाला है नहीं। अविनाशी बाप अविनाशी पुरुषार्थ कराते हैं। यहाँ तो पैसे के लिए मनुष्य क्या नहीं करते हैं। बाप बच्चे को, बच्चे बाप को मार डालते, जब पैसे की बहुत भीड़ पड़ती है। वहाँ पैसे की भीड़ की बात नहीं होती। अब अविनाशी बाप से अविनाशी वर्सा लेना है तो अविनाशी बाप को, अविनाशी वर्से को याद करना है। और कोई तकलीफ नहीं, सिर्फ दो अक्षर हैं। उसको महामंत्र कहा जाता है। बस, यह दो अक्षर याद करने से तुमको राजतिलक मिल जाता। अब इस याद में है बेस, जितना जो याद करेंगे। बाप (की) कितनी महिमा है दो अक्षर की– योग और ज्ञान। शास्त्रों आदि के ज्ञान की यहाँ कोई बात नहीं। दो अक्षर याद करने लिए कहते हैं– फुर्सत नहीं रहती, हम याद नहीं कर सकते, घड़ी–2 भूल जाते हैं। दो अक्षर की यात्रा नहीं कर सकते! तुम लोग गीत–कविता–डायलॉग आदि बनाते हो, याद करते हो, वास्तव में इन सबकी यहाँ दरकार नहीं है। यहाँ तो अनपढ़ और चुप बनना है। क्या तुम बीज और झाड़ को नहीं समझ सकते हो? बीज को हाथ में लेने से ही सारा झाड़ आ जावेगा– इसमें चार युग, चार वर्ष हैं। यह सब बुद्धि में लाना देरी नहीं लगती। सेकेण्ड में स्वर्ग की बादशाही मिल जाती है, सिर्फ यह याद करना है। सेकेण्ड में साक्षात्कार कराया जाता है। उसी समय जैसे स्वर्ग व कृष्णपुरी में हैं। सिर्फ दो बातें याद करनी हैं। एक तो– बाप की याद, दूसरा– यह नॉलेज बहुत ऊँच ते ऊँच है, मनुष्य से देवता बनने की। देवताएँ तो पवित्र होते हैं। नॉलेज हमेशा ब्रह्मचर्य में पढ़ी जाती है। जब पढ़कर घर सम्भालने लायक बन सके तब बाद में शादी करनी होती है। अपने घर वालों को, क्रियेटर सम्भालने होते हैं; इसलिए अपनी कमाई चाहिए। तो ब्रह्मचर्य में कमाई होती है। आजकल तो धन के भूखे हो गए हैं। थोड़ी पैदाइश हुई फिर दूसरा कोर्स करते हैं। अब बाप कहते हैं– बच्चों को यह कोर्स तो बहुत सहज है। तुम श्रीमत पर रात को प्रैक्टिस करो। दो–तीन बजे को अमृतवेला कहा जाता है। सवेरे उठकर स्वदर्शनचक्र फिराना, यह है बुद्धि का काम। बाप का फरमान है– मुझे निरंतर याद करो तो तेरे विकर्म विनाश होने चाहिए, नहीं तो तुम सजनियों को कैसे ले जाऊँ! तुम सजनियाँ हो पतित। सभी के पर टूटे हुए हैं। अब सिर्फ याद करो तो पवित्र बन जाएँगे। सवेरे उठने का प्रयत्न करो, रात को जागो। रात को यह बुद्धि की यात्रा करना बहुत सहज है और मदद भी बहुत मिलेगी। दिन में तो याद न भी ठहरे, रात को पुरुषार्थ करना सहज है। 5 मिनट भी पुरुषार्थ करो। उस समय भी माया याद में विघ्न डालती है। मुख्य है ही याद। तुम जानते हो, हम आत्मा है, हमको प०पि०प० पढ़ाय रहे हैं। उनसे पूरा पढ़ना है। वह बाप भी है। उनका बनना है। तुम जानते हो, बरोबर हम आत्माएँ आकर शिवबाबा से

मिले हैं। आत्मा परमात्मा अलग रहे...। जीव आत्माएँ आकर बाप से मिलती हैं, तो ज़रूर परमात्मा को भी जीव आत्मा बनना पड़े। वह तो है सुप्रीम आत्मा। आत्मा–परमात्मा का रूप एक ही है; जैसे स्टार चमकता है, उनमें 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है, बाप कहते हैं– मैं भी स्टार हूँ। मैं भी ड्रामा के बंधन में बँधा हुआ हूँ। यह दुनिया नहीं जानती। बाप कल्प–2 संगमयुग के सिवाय कब आए न सकते। आफतें आदि तो बहुत आती रहती हैं। बाप कहते हैं, मैं आता ही तब हूँ जब सभी पतित बन जाते हैं। मैं रचता ही नई दुनिया का हूँ। आता हूँ पतित दुनिया में। पतित पहले आत्मा बनती है। आत्मा जानती है हम पहले पावन थीं, अब पतित बनी हैं। यह शिक्षा तुमको ही मिलती है। टीचर के सामने जो स्टूडेन्ट्स होते हैं, उनको शिक्षा मिलती है न! तुमको पहले–2 शिक्षा मिलती है– इन 5 विकारों को जीतो, योग–अग्नि से विकर्मों को भस्म करो। इस विख ने ही तुमको कब्रदाखिल कर दिया है। इनको पॉयज़न कहा जाता। ज्ञान अमृत पवित्र बनाते हैं, विख अपवित्र बनाते। विख से बिच्छू–टिंडन पैदा होते हैं। बाप को और वर्से को याद करना तो बहुत सहज है। कई बच्चियाँ कहती हैं– बाबा, धारण(ा) नहीं होती है, बहनों माफिक समझाय न सकती हैं। बाप कहते हैं– लाडले बच्चे, यह तो हर एक के कर्म का हिसाब–किताब है। कोई तो 25 वर्ष रहते हुए भी धारण नहीं कर सकते। तुम आत्माओं का बाप ...तो परमात्मा है। वह है स्वर्ग का रचता ...। बाप स्वर्ग का वर्सा देने ही आए हैं। तुम बाप को तो याद करो। बच्चों को भी होशियार करना चाहिए। तुम बच्चों को पहले रहम करना चाहिए अपने बच्चों पर। तुम बच्चे समझते हो, इस समय हम अपने मोस्ट बिलवेड प०पि०प० सन्मुख बैठे हैं। कल्प पहले भी हमने निराकार बाप से बेहद का वर्सा स्वर्ग का लिया था। बाप कहते हैं, मुझे भी इस शरीर का लोन लेना पड़ता है। (किराये) पर बैठे हैं। अपना न होने से ज़रूर किराये पर लेंगे। यह रथ है, जिसमें कल्प–2 रथी बनते हैं। रथ में रथी अब देख रहे हो न! आगे तो गीता पढ़ने से कुछ भी समझ नहीं आता था। कहाँ यह अर्जुन, वह घोड़ों का रथ बैठ दिखाया है! तुम्हारा बाप रथी है। बच्चों को कहते हैं– मुझ बाप को याद करो। याद का फिर चार्ट रखो। ऐसा साजन, जो 21 जन्म सुख देते हैं, उनको क्यों न याद करेंगे! उस विख पिलाने वाले से तो झट दिल लग जाती है। यह है (गुप्त)। अब बाप कहते हैं, अपन को आत्मा निश्चय कर फिर बाप के श्रीमत पर चलना है। फिर माया बड़ा हैरान करती है। वह भी कम उस्ताद नहीं है, अच्छे–2 को जीत लेती है। बाबा स्वर्ग का मालिक बनावे और माया चण्डाल के जन्म में ले जाती; क्योंकि श्रीमत को छोड़ देते हैं। यहाँ बच्चे जानते हैं हमको भगवान पढ़ाते हैं। तुम गॉडली स्टूडेन्ट हो न! भल दूसरा भी कोर्स उठाते, फिर भी टीचर को याद करेंगे। बाप कहते हैं– भल गृहस्थ व्यवहार में रहो, साथ में दूसरा कोर्स उठाओ। सदा सुखी बनने लिए तुमको इतना अथाह धन देता हूँ जो तुम 21 जन्म कब भीड़ न देखेगी। तुम्हारे जैसा अक्लमंद सृष्टि भर में कोई नहीं होता। प्रेसिडेंट आदि की कितनी महिमा करते हैं; परन्तु तुम मोस्ट वण्डरफुल, इनकागनिटो, बड़ी अथॉरिटी हो। तुम्हारे जैसा नॉलेजफुल इस दुनिया में कोई हो नहीं सकता। साधु–संत आदि तुम्हारे आगे कुछ नहीं हैं, बिल्कुल पत्थर बुद्धि हैं। इन्होंने तो और ही पत्थर बुद्धि बनाया है। अब तुम बच्चे जानते हो, भारत को स्वर्ग बनाय हम 21 जन्म लिए स्वर्ग के मालिक बनते हैं। जगदम्बा को कितनी बड़ी प्राप्ति है! वह भी यह ही महामंत्र देते हैं। कहेंगे– शिवबाबा को याद करो। बाप सन्मुख कहते हैं– लाडले बच्चे, मुझे याद करो। यह यात्रा भूलो मत। वेस्ट टाइम न करो। यह बहुत भारी कमाई है! बुद्धियोग वहाँ चला जाना चाहिए। हम शिवबाबा के सन्मुख हैं। बाप के घर आए हैं। अभी तो तुम हरिद्वार में बै(ठे) हो। हरि परमात्मा खुद बैठे हैं। वहाँ तो पानी है। (यह) सच्चा–2 हरि का द्वार है। हर–2 यानी दुःख हरने वाला। यहाँ तुम प्रैक्टिकल बैठे हो। सो दुःखहर्ता–सुखकर्ता तुम्हारे सामने बैठे हैं। वह लोग फिर गंगा किनारे जाकर बैठते (हैं)।

समझते हैं, गंगा का तट हो, गंगा जल मुख में हो। जब कोई मरते हैं तो गंगा जल पिलाते हैं। अब गंगा पतित–पावनी नहीं है। पतित–पावन है ही बाप। शिवबाबा की याद देनी है। हर एक को याद उस शिवबाबा को करना है, तो अंत मते सो गते हो जावेगी। ऐसे नहीं, पिछाड़ी में कोई बैठ कहेंगे– शिवबाबा को याद करो। अंत में आप ही शिवबाबा की याद में शरीर छोड़ना है। अब हमको शिवबाबा पास जाना है मुक्तिधाम। सतयुग को जीवनमुक्ति धाम कहा जाता है। धाम, रहने के स्थान को कहा जाता है– निर्वाणधाम। निराकार आत्माएँ ब्रह्म महतत्व में रहती हैं। अब तुम आकर हरि के घर में बैठे हो। दुःख हरने वाला एक ही है। अब तुम बच्चों को शिवबाबा, उनका स्वीटहोम याद आवेगा। बाबा आए हैं अपने घर ले जाने। अब शिवबाबा के स्वीटहोम को याद करना है। यहाँ तो कोई स्वीटनेस है नहीं। बच्चे भी बिच्छू–टिंडन, पेट चीर कर निकालते हैं। यह सब फैशन विलायत से निकली है। क्यों यह फैशन निकला है? वह यह सेन्सीबुल समझ जावेंगे। है तो नर्क का द्वार न! तो नर्क के द्वार से न निकाल, पेट से निकालते हैं। अब बाप बच्चों को कहते हैं– बेहद की राजधानी लेनी है तो रात को यात्रा करो। मैं आता ही हूँ घोर अंधियारी रात में। ब्रह्मा की रात पूरी हो दिन होता है। मैं आता हूँ बेहद के रात और दिन के संगम पर। तो तुम भी रात को नींद को जीत, याद करने का अभ्यास करो। दो–तीन बजे के समय को ब्रह्ममुहुर्त कहा जाता है। बाप शिक्षा देते हैं ब्रह्मा द्वारा कि रात को जाग मुझे याद करो, तो फिर तुम पक्के हो जावेंगे। माया बहुत सतावेगी, फिर भी तुम मेहनत करो। इसमें मेहनत सारी बुद्धि की है। उठते–बैठते–चलते याद रहनी है। बाप कहते हैं– थक मत जाना रात के राही। रात को बहुत मज़ा आवेगा। फिर वह नशा दिन में भी चलेगा। एक तो बाप को याद करो और अपनी तकदीर की महिमा करो। और सभी की तकदीरें तो फुटी हुई हैं। तुम्हारी तकदीर अब जग रही है, औरों की सो रही है। जितना उस तरफ धन कमाने की रहती है, उनकी तकदीर सोई समझो। सच्चे–2 तकदीर(वान) तुम हो। पेट कोई जास्ती थोड़े ही खाता है। 8 आना भी मुश्किल मिल। लोग क्या खाते हैं? मर्ची और मकई, चने का आटा मिलाय, रोटला खाय लेते हैं। यहाँ तो तुमको सब कुछ मिलता है। तुमको चलना ही है साधारण। न बहुत साहुकारी, न बहुत गरीबी। अब बाप कहते हैं– लाडले बच्चे, मुझे याद करो। मैं तुमको नैनों पर बिठाय ले चलता हूँ। मेरे नूरे रत्नों, नूरे चश्म बच्चों को हमेशा प्यार किया है। श्रीमत पर चलने से सदा सलामत रहेंगे। सदा सलामत का अर्थ भी बड़ा भारी है। कब तुमको चोट नहीं लगेगी, कोई तकलीफ न होगी– इतना तुमको सदा सलामत बनाते हैं। निरोगी काया रहेगी। न काल की ताकत है, अकाले एक इसके। अगर अच्छी रीति याद करेंगे तो मदद मिलेगी। जिन्होंने कल्प पहले पुरुषार्थ कर अपनी प्रालब्ध बनाई है, साक्षी हो देखते हैं। यह अपन को इन्श्योर करते हैं। बाबा भक्तिमार्ग में इन्श्योरेन्स मैगनेट हैं। ईश्वर अर्थ अलग निकालते हैं। गरीबों को गुप्त दान देते हैं। कोई को शादी करानी होती है तो गुप्त दे आते हैं। गुप्त दान का फल भी ऐसा मिलता है, शो करने से इसकी ताकत आधा हो जाती है। मैगनेट बाप को कहते हैं। तुम इन्श्योर करते आए हो। जो–2 जैसे अपन को इन्श्योर करते हैं ऐसा फल मिलता है। पाप करते हैं तो उसका दण्ड मिल जाता है। पुण्य का फिर अच्छा फल मिलता है। वह होते हैं हद के फिलैंथ्रॉपिस्ट– कमाई से आठ आना, चार आना निकालते हैं। अब तो तुमको कम्पलीट फिलैंथ्रॉपिस्ट बनना है। फुल इन्श्योरेन्स करो 21 जन्म लिए। गरीब होंगे तो उस अनुसार इतना इन्श्योर करेंगे। देखो, मम्मा ने सिर्फ तन और मन इन्श्योर किया। कन्याओं पास तो धन होता नहीं। उन्हों को ख्याल नहीं रखना है। वह फिर तन–मन से सेवा कर रहे हैं; इसलिए कन्याएँ बहुत प्यारी लगती हैं। कन्या ही नम्बरवन में आ जाती है। बाबा अधरकुमार था। हाँ, कोई कुमार निकले। स्वयंवर रच और पवित्र

रह दिखावे तो अहो सौभाग्य! सरेण्डर भी पूरा हो। वह बहुत अच्छा पद पाय सकते हैं। बाबा समझाते हैं, कर्मों का भोग भी सारा यहाँ चुक्तू करना है। मम्मा–बाबा को भी कर्म का भोग भोगना पड़ता है। दूसरे जन्म में गर्भजेल में तो जाना न है; इसलिए रहा हुआ हिसाब–किताब यहाँ ही निकलेगा। ऐसे नहीं, ईश्वर का बना हूँ फिर रक्षा क्यों नहीं करते? नहीं, कर्मभोग तो ज़रूर यहाँ चुक्तू करना है। यहाँ का भी कुछ न कुछ हिसाब–किताब होता है तो वह भी चुक्तू करना होता है। जन्मते नाम तो कोई होते नहीं। पीछे तो जन्म मिलेगा गर्भमहल में। तो यहाँ रहा हुआ चुक्तू करने में खुश होना चाहिए। ऐसा न हो, कोई उल्टा–सुल्टा जन्म मिले। जो सर्विसएबुल हैं, एडवांस में जाना है तो बहुत अच्छे घर में जाकर जन्म लेते हैं। तो बहुत सहज बात है– सिर्फ साजन, पतियों के पति को याद करो तो विकर्म विनाश हो। अपन को आत्मा भूल जाते हो तब बाप की याद नहीं ठहरती है। बाप कहते हैं, मुझे याद करो तो सदा सुखधाम भेज देंगे। यह है सदा दुःखधाम। तुम ऑलराउण्डर हो। जानते हो, हमारे 84 जन्म पूरे हुए। सबको परमधाम वापस जाना है, फिर नए सिर आकर पार्ट बजाना है। अब घर जाना है। ऐसे–2 अपने साथ बातें करते रहो। उपाय तो बहुत सहज बतलाते हैं। अपन को ट्रस्टी समझ लो तो ममत्व न रहेगा। बाबा, यह सब आपका है। हम आपकी ही श्रीमत पर चलेंगे। बाबा कहते, मैं तो पक्का ट्रस्टी हूँ। इस समय सबका ट्रस्टी हूँ। तुमको श्रीमत देते रहते हैं, ऐसे–2 करो। बच्चे जानते हैं, शिवबाबा सन्मुख बात कर रहे हैं। बस, बाप को ही याद करने की प्रैक्टिस करनी है। इनसे ही बेड़ा पार होना है। आधा कल्प भक्ति की ही इसलिए है। आधा कल्प की मेहनत मैं सेकेण्ड में पूरी करता हूँ। अब मेरी मत (पर) चल मुझे और वर्से को याद करो। मुझे याद करो परमधाम में। चार्ट रखो तो तुमको बहुत फायदा होगा और खुशी भी होगी। तुमने जिस्मानी यात्रा आधा कल्प की है, वह सफल नहीं हुई। अभी है तुम्हारी सच्ची यात्रा घर जाने की। जिसके लिए आधा कल्प जिस्मानी यात्रा की वह सफल न हुई। अब यह सच्ची यात्रा सच्चा बाबा सिखलाते हैं। तुम हो ब्रह्मा के बच्चे, शिवबाबा के पौत्रों। दादों का वर्सा सबके लिए है। यहाँ है ही डाडे का वर्सा, सारे मनुष्य मात्र को मिलना है। तुम बच्चे जानते हो, यह शरीर रूपी कपड़े बहुत सड़ गए हैं। अब बाप कहते हैं– इस शरीर और पुरानी दुनिया का भान छोड़ो। अब मेरे पास आना है। फिर वहाँ से स्वीट राजधानी में आवेंगे। यहाँ तो यह स्वीट राज्य नहीं है। यह है रुण्ज के पानी मिसल राज्य। तुम हो द्रौपदियाँ। शास्त्रों में भी एक कहानी बनाई हुई है द्रौपदी और दुर्योधन की। अच्छा, मीठे–2, सिकीलधे बच्चों प्रति मात–पिता व बापदादा का यादप्यार; क्योंकि बाप का बच्चों पर बहुत आर(प्यार) रहता है। कहते हैं– जैसे हो, वैसे हो, मेरे हो। फिर कोई–2 ऐसे भी निकल पड़ते हैं– आश्चर्यवत् सुनन्ति, कथन्ति, फारकती देवन्ति। जैसे हो, मेरे हो; परन्तु श्रीमत पर चलना, आज्ञाकारी बनना। शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा फरमान करते हैं– अपने से रात को बातें करते रहो। बात भी करो, याद भी करो तो बेड़ा पार है। ॐ (जो भी पार्टी मधुबन में आती है तो दिल्ली, जयपुर सेन्टर पर भी पहले इतला करना है कि हम फलानी गाड़ी से, फलाने टाइम, जयपुर से अथवा दिल्ली से क्रॉस करेंगे। कितने की पार्टी है वह भी लिखना है, तो उसी अनुसार मधुबन की चीज़ें देहली वाले अथवा जयपुर वाले स्टेशन पर जाय पहुँचाए जावेंगे। जनता गाड़ी जयपुर नहीं जाती है, यह ध्यान पर रखना है। समझा!)